बेर की पत्तियाँ

नीचे बैठ सतसंग व जाप किया। इस स्थान पर गुरुद्वारा टाली साहब है। पंखो के (करतारपुर) तथा घक्काकोटली (गुरदासपुर) में गुरुओं से सम्बन्धित टाली साहब विद्यमान हैं।

बेर साहब :

रावी नदी के किनारे करतारपुर (अब पाकिस्तान में) गुरु नानक देव जी के जीवन से सम्बन्धित गुरुद्वारा बेर साहब स्थित है।

हरिमन्दिर साहब (अमृतसर) के बेर वृक्ष :

यहां सरोवर की परिक्रमा में बेर के प्राचीन वृक्ष हैं जो अलग–अलग कारणों से प्रसिद्ध है।

- **दुख भंजनी बेरी :–** चमत्कारिक ऐतिहासिक जनश्रुति से जुड़े इस वृक्ष के बारे में कहा जाता है कि ४०० वर्ष पूर्व हाथ पैर व अन्य अंग गल चुका एक कोढ़ी इस बेर वृक्ष के नीचे अमृत सरोवर में स्नान करने पर स्वस्थ एवं रोग मुक्त हो गया। मान्यता स्वरूप आज भी लोग इस स्थान पर स्नान करते हैं।
- **बाबा बुढ्ढा जी की बेरी :–** इस वृक्ष के नीचे बैठ बाबा बुढ्ढा जी गुरूओं के समय में स्वर्ण मन्दिर, सरोवर तथा परिक्रमा आदि निर्माण कार्यो की सेवा संचालित करते रहे। बाबा बुढ्ढा जी ने स्वयं गुरुओं को गुरू गद्दी का तिलक लगा गद्दी सौंपने का कार्य संपादित किया।
- **सुक्खा सिंह महताब सिंह की बेरी :–** भाई सुक्खा सिंह व भाई महताब सिंह ने स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता बनाये रखने के लिये ऐयाश मस्सा रँगड़ को खत्म करने से पूर्व दरबार साहब पहुँच अपने घोड़े जिन बेर वृक्षों से बाँधे थे, वे वृक्ष आज भी परिक्रमा में इतिहास की याद दिलाते हैं।

सिख धर्म में वृक्षारोपण :

सिख धर्म में वृक्ष और उपवन (बाग) बड़ी श्रद्धा से देखे जाते हैं इन वृक्षों के दर्शन से अपने गुरु व धर्म के प्रति श्रद्धा में वृद्धि होती है। आम सिख बन्धुओं की धारणा है कि गुरु के नाम पर रोपित वृक्ष व बाग अधिक हरे–भरे व लोक मंगल करने वाले होते हैं।

सिख धर्म में सेवा, संगत और लंगर का विशेष महत्व है। आज के युग में जब वृक्षों के कम हो जाने से मानव का कष्ट बढ़ रहा है, वृक्ष धन अभिवृद्धि कर मानव मात्र का कष्ट घटाना श्रेष्ठतम सेवा है। इस दिशा में सिख धर्म गुरुओं ने पहल की है। सिक्ख धर्म में वृक्ष वन के प्रति श्रद्धा एवं संरक्षण की भावना अद्वितीय है।

इन दिनों खालसा पन्थ के तीन सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे जयन्ती वर्ष के कार्यक्रम में खालसा पन्थ ने पर्यावरण संरक्षण को अपने मुख्य कार्यक्रम का एक बिन्दु बनाया है जिसमें अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जा रहा है।

आनन्दपुर साहिब गुरुद्वारे के जत्थेदार प्रोफेसर मन्जीत सिंह जी गुरुद्वारा में पधारने वाले श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में वृक्षारोपण हेतु पौध देते हैं और लोगों को बताते हैं कि सिख धर्म में वृक्षारोपण करने की शिक्षा है। लोगों का कहना हैं कि प्रसाद स्वरूप दिए गये पौधो की सफलता लगभग शत–प्रतिशत होती है। अपने महान सिख गुरुओं की सेवा साधना करने की शिक्षा को ध्यान में रख कर, मानवता की सेवा हेतु वृक्ष लगाने चाहिए व धर्म स्थलों पर 'गुरु के बाग' स्थापित करना चाहिए।

।। धनासरी महला १।।
आरती

१ ओं सतिगुर प्रसादि।।
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती।
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलत जोती।।१।।
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती।
अनहता सबद वाजंत भेरी।।१।। रहाउ।।

सारा आकाश थाल है। सूर्य, चन्द्र इसमें दीपक हैं, तारे इसमें मोती समान रखे हैं, दक्षिण के मलयगिरी पहाड़ जहाँ चन्दन के वनों की सुगन्धित हवा धूप है, हवा चंवर कर रही है और समस्त वनस्पति वन वृक्ष पुष्पित हो ज्योति रूप प्रभु की आरती के लिये पुष्पांजलि दे रही है।।१।। हे जीवों के आवागमन का नाश करने वाले ! आपकी कैसी सुन्दर आरती हो रही है। अटूट बजने वाला अनाहत नाद ऐसा प्रतीत होता है कि मानो आपकी आरती के लिए नगाड़े बज रहे हैं।।१।। रहाउ।। ***–(६६३ गुरु ग्रन्थ साहिब)***

उ.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड
पूर्वी विंग, तृतीय तल, ए ब्लाक, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ०प्र०) 226010; फोन : 0522–4006746, 2306491 द्वारा प्रकाशित
वेबसाइट : upsbdb.org; **ईमेल :** upstatebiodiversityboard@gmail.com
आलेख : गुरमीत सिंह, सहायक वन संरक्षक; चित्रः इन्द्रधनुष स्टूडियो, लखनऊ

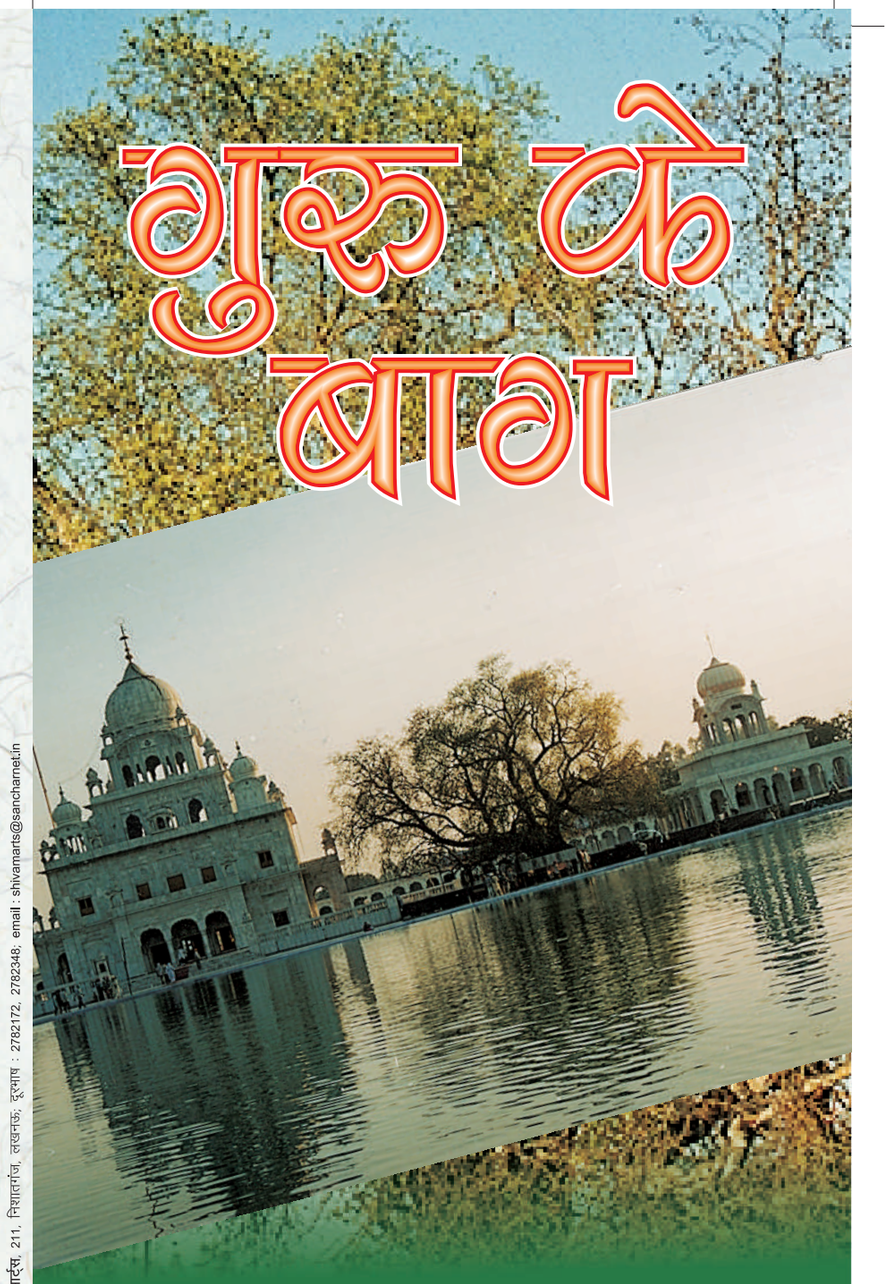

गुरु के बाग

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, 211, निशातगंज, लखनऊ, दूरभाष : 2782172, 2782348, email : shivamarts@sanchamet.in

ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ।
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किसकी सेउ।।

नानकमता का पीपल वृक्ष

सिख धर्म में वृक्षों का महत्त्व :

सिख धर्म में वृक्षों का अत्यधिक महत्त्व है, वृक्ष के अंग प्रत्यंग को देवता रूप में देखा गया है जैसा गुरु ग्रन्थ साहिब की निम्न वाणी में स्पष्ट है :

ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ।
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किसकी सेउ।।

(हे मालिन ! पूजा के लिए जो तुम ये पत्र, शाखा व पुष्प तोड़ रही हो इसमें) ब्रह्मा पत्ती हैं, विष्णु शाखा हैं, शंकर देव पुष्प हैं, इस तरह तुम इन तीनों प्रत्यक्ष देवों को तोड़ डालती हो तो फिर पूजा किसकी करती हो।

–गुरु ग्रन्थ साहब २–१–१४। (पृ. ४७६)

।। माझ महला ५।।

तूं पेडु साख तेरी फूली। तूं सुखमु होआ असथूली।
तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ।।१।।

हे भगवान ! तू वृक्ष है, अर्थात् विश्व का मूल रूप है और सृष्टि तेरी शाखा है। तू सूक्ष्म रूप ही विराट रूप में बदल गया है। तू आप ही जलनिधि है और तू ही उसके मध्य जल–स्वरूप है। तू ही पदार्थ–रूपी फेन अर्थात झाग है और तू ही जीव–रूपी बुदबुदा है। तुझसे अलग कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता।।१।।

गुरु के बाग :

सिख धर्म में गुरु कार्य (सेवा, संगत, लंगर) में उपयोग आने वाले

नानकमता

धर्म स्थलके पास स्थित वृक्ष समूहों को गुरु के बाग कहा जाता है। गुरु के बाग आज भी बहुत प्रसिद्ध हैं। अमृतसर में ऐरोड्रम रोड पर स्थित 'गुरु के बाग' जिसके बारे में कहा जाता है कि लड़ाई के समय सिख सैनिकों का जो लंगर चलता था उसमें विविध आवश्यकताओं की पूर्ति इस बाग से होती थी।

सिख धर्म में गुरु द्वारों, सरॉय, कुँओं व सरोवरों के निकट विविध प्रकार से उपयोगी वृक्षों के रोपण की परम्परा रही है। स्वयं गुरु साहिब वृक्षों की छाया में बैठकर सेवा कार्यों की देख–रेख करते, दीवान लगा उपदेश देते, भजन कीर्तन गायन का आनन्द लेते थे।

गुरु से जुड़े वृक्ष :

कुछ वृक्ष महान गुरुओं के सान्निध्य में आकर हमेशा के लिए धन्य हो गये यथा

नानक मता का पीपल वृक्ष :

जगत भ्रमण के दौरान दिल्ली से इस स्थल पर पहुँचने पर गुरु नानक देव जी ने इस वृक्ष के नीचे विश्राम किया था, कहते हैं कि पहले यह वृक्ष सूखा था। गुरु महाराज के यहां बैठते ही यह वृक्ष हरा भरा हो गया कुछ मसन्दों द्वारा कालान्तर में इसे जला दिया गया। सिक्खों के छठे गुरु हरगोविन्द जी द्वारा नानकमत्त पहुँच इस सूखे वृक्ष पर जल में केसर घोल कर छीटें दिये जाने पर वृक्ष पुनः हरा भरा हो गया।

यह वृक्ष आज भी हरा है इस घटना के सम्बन्ध में गुरु ग्रन्थ साहब की यह वाणी याद आती है –

रीठा वृक्ष व फल

।। म. ४।।

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ।
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिया जाइ।

अर्थात– जिस भूमि पर प्यारा सतिगुरु आकर बैठा है, वह भूमि हरी–भरी हो गई है। वे जीव हरे हो गए हैं (अर्थात् उन मनुष्यों के हृदय प्रसन्न हो गए हैं), जिन्होंने जाकर प्यारे सतिगुरु का दर्शन किया है।

रीठा साहब का रीठा वृक्ष :

हल्द्वानी से चोर गलिया होते हुए मोरनैला जाने के रास्ते में रीठा साहब गुरु द्वारा पड़ता है। नानक मता से आगे बढ़ने पर गुरु नानक देव जी योगी मच्छन्दर नाथ के साथ इस स्थल पर आये थे। वे इस रीठे के वृक्ष के नीचे बैठे थे मच्छन्दर नाथ को भूख लगी थी, गुरु जी ने अपने सेवक मरदाना से सिर के ऊपर की डाल हिलाने को कहा इस डाल से गिरे रीठे मीठे थे जिसे लोगों ने खाया, आज भी मात्र उसी डाल के रीठे मीठे होते हैं। शेष शाखाओं के रीठे कड़वे होते हैं। इसी चमत्कारी वृक्ष के नाम पर इस स्थल पर स्थापित गुरुद्वारे का नाम रीठा साहब पड़ गया।

शीशम वृक्ष

टाली साहब :

पंजाबी में शीशम को टाली कहते हैं। गुरु जी ने अमृतसर स्थित संतोखसर में कई वर्ष टाली (शीशम) वृक्ष के